सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), भुवनेश्वर

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

पाँचवाँ अंक - 2023

नागरिक

अध्यक्ष कार्यालय

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय

ओड़िशा, भुवनेश्वर

अनुक्रमणिका

	शीर्षक	लेखक/कवि	पृष्ठ सं.
1.	ओड़िशा : प्राचीनता और नवीनता का दर्शनीय संगम स्थल	हेमंत कुमार यादव,	5
2.	फोमो (FOMO)	शैलेंद्र कुमार	9
3.	फ़र्ज़	हरप्रीत कौर ट्यूटर	11
4.	उलझन (एक बुजुर्ग की व्यथा)	बंशीराम बबेरवाल "डाडा"	12
5.	विगत 75 वर्षों में हिंदी की विकास यात्रा	श्री विभास चंद्र	13
6.	मेरा अस्तित्व	रेखा परिड़ा	15
7.	चाहत	सूरज कुमार	16
8.	ईश्वर के किराएदार	सोनाली सुधास्मिता त्रिपाठी	18
9.	मौत से भी मैं तुझे चुरा लूँ	सागरिका पाढ़ी	19
10.	जवान	अर्कस्नाता प्रधान	20
11.	तेरी महिमा	सहदेव मांझी	22
12.	जीवन का गहरा युद्ध	प्रतीक्षा कुंड	23
13.	आशु की आशाएँ	तनुजा बेहेरा	24
14.	मैं माँ को मानता हूँ	सुभ्रिता	25
15.	विश्वास खोती मानवीय संवेदनाएँ	बृजकिशोर कुमार	26
16.	पाबंदी	डॉ अभय नारायण नायक	27
17.	समय	श्रद्धा आचार्य	28
18.	एक सैनिक	अमित कुमार तिवारी	29
19.	बारूद	समीर कुमार कलस	30
20.	इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी)	विशाल शर्मा	31
21.	कूटनीति	सूर्य कुमार पट्टनायक	33
22.	कलम का मूल्य	विवेक दाधीच	35
23.	मेरा बचपन	मिनती मल्लिक	37
24.	आखिरी मौका	परमेश्वर दत्त	37
25.	तेतर	राजू साव	38
26.	सखिभूमि : साखीगोपाल	अबिनाश दाश	41
27.	कविता	विक्रमादित्य सिंह	43
28.	मेरा क्या कसूर है	शांतिलता सेठी	44
29.	हर रंग हिंदुस्तान हो	विनोद कुमार "बल्लोपुरी"	45
30.	शहरी आवासीय गतिविधियों के माध्यम से कार्बन मुक्त विश्व...	डार्विन कुमार	46
31.	देशभक्ति	बंदिता साहू	50
32.	गुमनाम डाकिया	चौधरी स्वर्ण प्रभा पंडा	51
33.	कहाँ गए वो गुजरे पल	संजुक्ता प्रधान	52

गुमनाम डाकिया

चौधरी स्वर्ण प्रभा पंडा
वैज्ञानिक (एफ), एन.आई.एस., भुवनेश्वर

युग बदलता रहा, जिंदगी बदलती रही..
पर आज भी गलियों में इंतजार नहीं बदला है.. ॥1॥

भीड़ से उलझी, भाग-दौड़ वाली जिंदगी में
आज भी उस डाकिया का किरदार नहीं बदला है.. ॥2॥

साईकिल की घंटी उम्मीद बढ़ा देती है..
डाकिए की वह मुसकान अभी नहीं बदली है.. ॥3॥

खत, टेलीग्राम की अनदेखी गठरी को समेट
वह संदेश सुनाने का तरीका अभी नहीं बदला है॥4॥

खबर सुनाने का धैर्य और साहस खूब था उसमें
सुनते खबर में माँ-बाप का प्यार, बहन की राखी,
दोस्तों की यादों का अंबार नहीं बदला है॥5॥

परिवार के हिस्से में वह नहीं है कभी शामिल
लेकिन अपनी हिस्सेदारी में डाकिया आज भी नहीं बदला है॥6॥

चिट्ठी को अपने पते का नाम देना उसे खूब आता है
खुद गुमनाम होकर भी उसका कर्तव्य नहीं बदला है॥7॥
क्या डाकिया सही में गुमनाम हो गया है

कहाँ गए वो गुजरे पल

संजुक्ता प्रधान

वैज्ञानिक (सी.), एन.आई.सी., भुवनेश्वर

कहाँ गए वो दिन जब तुम माँ का पल्लू न छोड़ते थे
माँ-माँ पुकारते न थकते थे
खुशी के पल तो माँ, डर लगे तो माँ
बाहर से आओ तो माँ, घर के अंदर माँ
जब कुछ चाहिए माँ, बीमारी हो तो माँ
उस पल का पूर्ण आनंद लिया मैंने
मानो मेरी अहमियत ने आसमान छू लिया

फिर आयी ये किशोरावस्था, बचपन कहीं खो गया तेरा
माँ की पुकार को मैं तरसने लगी
अब मेरा बच्चा बोलेगा यही सोचती रही
पर तुम माँ का अस्तित्व ही भूल गए
ये कैसा परिवर्तन, घर का माहौल बदल गया
बिस्तर ज्यों के त्यों, सम्पूर्ण घर ज्यों का त्यों
बचपन की खिलखिलाहट, शोर-शराबा कहीं खो गया

पूरा घर सुनसान, मानो जीवन विहीन हो गया
कुछ बोलो तो तुम्हारा चिड़चिड़ाना
मैं ना समझूँ ये उम्र का गणित
कभी लगे किसी ने काला जादू तो नहीं किया मेरे बच्चे पर
कभी लगे किसकी नजर लग गई मेरे घर-संसार को
अभी भी मुझे आस है मेरे बच्चों को मेरी याद आएगी
वो वापस माँ-माँ कहकर पुकारेंगे
वो पुराने दिन वापस आएँगे

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, भुवनेश्वर

न.रा.का.स. (का.), भुवनेश्वर के सक्रिय कार्यकर्त्ता